- रुमेन में बैक्टीरियल फर्मेन्टेशन को रोकने के लिए एंटीबायोटिक्स औशधियाँ पशु चिकित्सक के परामर्श से देनी चाहिए।
- रुमेन में हिस्टामिन बनते हैं जो रक्त में भी चले जाते है इसलिए इसमे एण्टी–हिस्टामीन औशधियाँ जैसे एविल अथवा कैडिस्टिन आदि चिकित्सक के परामर्श से देनी चीहिए।
- धरेलुनुस्खे के रुप में अदरक, हिंग, लहसुन प्रत्येक 10 ग्राम तथा 100 ग्राम प्याज का पेस्ट बनाकर पशु के जीभ पर लगानी चाहिए।
- श्रोग से आराम होने पर पशु कि भुख बढाने के लिए बिटामिन बी0 कॉम्पलेक्स की सुई 10 सी0 सी0 तीन या चार दिनों तक दें अथवा फ्लोराटोन या रुमेन बोलस सुबह–शाम तीन दिनो तक खिलावें।
- रोग होने पर पशु को चारा पानी ना दें।
- यथा संभव पशु के भोजन अथवा खानपान में अचानक परिवर्तन नही करनी चाहिए।
- हरा चारा जैसे बरसीम/ज्वार/रजका/बाजरा काटने के बाद कुछ समय छोड़ दे, तत्पचात खिलाएँ।
- हरा चारा पुरी तरह पकने के बाद खिलानी चाहिए।
- पशुओं को सुबह चरने से रोकना चाहिए क्यों कि सुबह में ओस से चारा भींगा होता है जो की अफरा पैदा करता हैं।
- आहार में राशन के रुप में 10–15% कटा हुआ चारा दाने के साथ मिश्रित कर देना चाहिए।
- बरीकी से पीसे हुए अनाज पशुओं को नही देनी चाहिए।

<u>नोट</u> :–यदि बार बार पशु का पेट फुलता हो तो सर्जन से सम्पर्क कर आपरेशन करावें ताकि पेट में यदि प्लास्टिक बोरा, तार, लोहा इत्यादि हो तो उसे निकाला जा सके।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः-
डा0 अनिल कुमार, डा0 अंकेश कुमार, डा0 रापेश कुमार
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 8051910781/ August/ 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2022-48

पशुओं में अफरा रोग–पहचान उपचार एवं बचाव

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

पशुओं में अफरा रोग-पहचान, उपचार एवं बचाव

परिचय :–

अफरा रोग जिसे हिन्दी में पेट फुलना भी कहते हैं, प्रायः सभी जुगाली करने वाले पशुओं में होता हैं। यह रोग मुख्यतः गाय, भैस, भेड. एवं बकरीओं को अधिक प्रभावित करता है। यह रोग पशुओं में अधिक खाने (विशेष कर हरा चारा) या दूषित चारा खा लेने के कारण होता है, जिससे पशु के पेट में आमोनिया, कार्बनडाईऑक्साइड, मीथेन आदि दूषित गैस अधिक मात्रा में बन जाती अधिक दूषित गैस बनने के कारण गैस का दबाब पशु के छाती पर पड़ता हैं। अगर समय रहते इसका इलाज कुशलता पूर्वक नही किया गया तो पशु कि जान भी जा सकती है।

रोग के कारण :–

यह मुख्यतः दो प्रकार का होता है :–

(क)प्राईमरी रुमिनलटेम्पनी :–यह पशु के पेट में स्थित भोजन के अधिक किण्वन (fermentation) से होती है। यह निम्नकारणों से हो सकता है :–

- अधिक मात्रा में हरा चारा का सेवन।
- अधिक मात्रा में दलहनी या रसदार चारा जैसे बरसीम या लूसर्न आदि के खाने से।
- अधिक या बारिक पिसा हुआ कार्बोहाइड्रेट युक्त आहार खाने से।
- आहार में रेशेदार भाग कम होने से।
- कुछ विषेश प्रकार की घास व पौधे जिनमे कुछ विशेष रसायन पाये जाते है जो कि रुमेन (पेट) मे जाकर झाग वाला अफरा पैदा करते है।
- दूषित आहार से।

(ख)सेकेण्ड्री रुमिनल टेम्पनी :–इसमे प्रायः हल्की गैस बनती है। अगर शरीर से बाहर निकलने के मार्ग में कोई रुकावट आती है तो यह रोग होत है। यह मुख्यतः निम्नकारणों से हो सकता है :–

- गले में रुकावट–आलू, गोभी, चारे के गोले आदि का ग्रासनली अथवा इसोफेगस में फंस जाना।
- इसोफेगस (भोजन की नली) का सकरा (पतला) हो जाना।
- इसोफेगस पर बाहर से दबाव पड़ना।
- डायफ्रामेटीकहर्निया का होना।
- टी0 आर0 पी0 का होना।

रोग के लक्षण :–

इस रोग में पशु का पेट फुला हुआ होता है और पेट को थपथपाने से ढोल कि जैसी आवाज आती है। पशु बैचेन हो जाता है, जुगाली नही करता, फेफड़े पर दबाव होने से साँस लेने पर अपार कष्ट होता है। तुरंत चिकित्सा नही होने से पशु की मृत्यु हो जाती है।

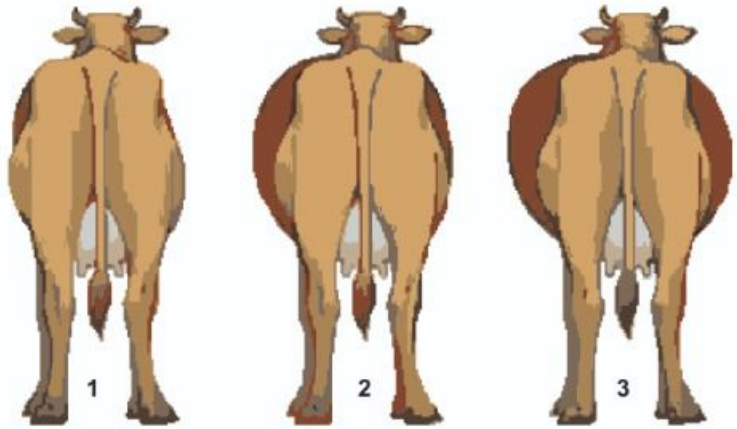

अवस्था

रोग निदान :–पशु के खाने का इतिहास और उपस्थित लक्षणों के आधार पर रोग का निदान किया जाता है। पेट के बायाँ भाग का फुलना और उस पर हाथ मारने से ढोल जैसी ध्वनी का प्रतित होना इस रोग का निचयात्मक लक्षण है।

उपचार एवं बचाव :–

रोग की प्रारंभिक अवस्था में पशु को इधर उधर घुमाने से फायदा हो सकता है। यदि रोग अत्यन्त गंभीर हो तब ट्रोकार और केनूला की सहायता से रुमेन (बायाँ पेट) को तुरंत पन्चर कर देनी चाहिए।

- यदि रोग अत्यन्त गंभीर ना हो तो पशु के मुँह के जबड़े के बीच लकड़ी का टुकड़ा डाल देनी चाहिए, जो गैस को बाहर निकाल ने में मदद करेगा तथा लार बाहर गिरने की बजाय अंदर जाएगी, जो गैस बनने की प्रकिया को कम करती हैं।
- गैस को कम करने के लिए तारपीन का तेल 30 ml तथा मिठासोडा 50 ग्राम दोनो को मिलाकर पिलानी चाहिए या टिम्पोल (Timpol)पाउडर गुनगुने पानी में मिलाकर दें। अथवा सीधे निडिल कि मदद से रुमेन में (बायाँ भाग) डाल देनी चाहिएं।